आशीष दशोत्तर

पर्यावरण हमारी नीति में ही नहीं, हमारी रीति और प्रीति में भी शामिल हो

पर्यावरण ऐसा विषय है जिस पर कोई अकेला व्यक्ति, कोई अकेला समाज, कोई अकेला वर्ग काम करे यह संभव नहीं है। पर्यावरण हमारे जीवन से जुड़ा है। हमारी प्रकृति से जुड़ा है। इसकी चिंता हमें सामूहिक रूप से ही करनी होगी। जब तक हम सब मिलकर इस दिशा में काम नहीं करेंगे, हमें सुखद परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। अनेकानेक विसंगतियां हैं, जिन्हें बढ़ाने में मनुष्य लगा हुआ है। हमारी अनेक आवश्यकताएं हैं जिन्हें पूर्ण करने के लिए हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। विकास की अंधी दौड़ के नाम पर हम प्राकृतिक संसाधनों को बाधित कर रहे हैं। प्राकृतिक स्थलों पर हो रही घटनाएं निरंतर हमें सचेत कर रही हैं फिर भी हम नहीं मान रहे हैं। इसे क्या समझा जाए? अगर हम अपनी ही ज़मीन खोदेंगे तो एक न एक दिन हमें उसमें गिरना ही है।

वरिष्ठ पर्यावरणविद् , लेखक एवं पत्रकार डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित ''पर्यावरण डाइजेस्ट'' के सम्पादक हैं। आपने मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के निर्देशन में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। पर्यावरण विषय में नीदरलैण्ड से डी. लिट् की उपाधि प्राप्त की। एक पत्रकार के रूप में स्वदेश इन्दौर, दैनिक वीर अर्जुन और हिन्दुस्तान समाचार एजेंसी के रतलाम जिला संवाददाता के रूप में कार्य किया। बाद में दैनिक स्वदेश में सह-संपादक भी रहे। पर्यावरणीय पत्रकारिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व एवं सफल योगदान के लिए डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित को अब तक अनेक सम्मान, पुरस्कार मिले हैं। उनकी पत्रिका आज देश की सबसे पुरानी और निरंतर प्रकाशित होने वाली पर्यावरण पत्रिका बनी हुई है। यह सुखद है कि पूरी दुनिया में इस वक़्त जब पर्यावरण पर चिंता व्यक्त की जा रही है और वातावरण को लेकर विचार-विमर्श जारी है, ऐसे में ''पर्यावरण डाइजेस्ट'' अपने प्रकाशन के 38 वर्ष पूर्ण कर रही है। पर्यावरण के लंबे अनुभव और इस क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण प्रयासों पर डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित से की गई चर्चा में कई महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर सामने आए।

आशीष दशोत्तर-ऐसा कहा जाता है कि पर्यावरण और डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित एक दूसरे के पूरक हैं। इसे संघर्षों से मिली सफलता कहें या संकल्प के साकार होने का प्रतिफल?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-आशीष भाई! सबसे पहले तो मैं इसे आपका स्नेह कहूंगा। यह सच है कि पर्यावरण के क्षेत्र में विगत 50 वर्षों के दौरान मुझे जल, जंगल, ज़मीन ही नहीं, वरन् प्रत्येक क्षेत्र में जुड़े रहने का अवसर मिला। ''पर्यावरण डाइजेस्ट'' और उससे भी पूर्व से मैं इनके साथ संलग्न रहा। मन में एक कसक थी कि जिस प्रकृति ने हमें इतना सब कुछ दिया है, उस प्रकृति के प्रति हम एहसान फरामोश कैसे हो सकते हैं? इसी भावना ने मुझे प्रकृति की तरफ आकर्षित किया और यह मेरा सौभाग्य रहा कि प्रकृति ने भी मुझे अपने साथ जोड़ा। यह गठबंधन निरंतर आगे बढ़ता रहा। मैं प्रकृति को समझता रहा और प्रकृति मुझे अपने अनुसार ढालती रही । आज यह महसूस ही नहीं होता कि प्रकृति और मुझमें कोई असमानता है। रही बात सफलता की तो यह मिलना, न मिलना कोई मायने नहीं रखता। हमें आत्मसंतोष होना चाहिए। मुझे यह

संतोष है कि मैंने अपनी प्रकृति को समझा और उसके साथ कुछ करने का जो प्रयास किया उसे समाज ने स्वीकारा और मुझे मान दिया।

आशीष दशोत्तर-पर्यावरण संबंधित कार्यों को अमूमन समाज में मान्यता नहीं मिलती है। आपका क्या अनुभव रहा?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-इस मायने में मैं बहुत सौभाग्यशाली रहा। पर्यावरण से जुड़े जिन मुद्दों को मैंने उठाया उनमें मुझे समाज के सभी वर्गो का स्नेह, आदर और सहयोग मिला। अनेक संस्थाओं ने मुझे पुरस्कृत और सम्मानित किया। इन सबसे मुझे अपने मिशन में निरंतर सक्रिय रहने की शक्ति प्राप्त हुई। इस बात को स्वीकार करने में मुझे कोई हिचक नहीं है कि जनसामान्य का पर्यावरण डाइजेस्ट को जो प्यार मिला है वह मेरे लिए महत्वपूर्ण है। पर्यावरण डाइजेस्ट देश की एकमात्र ऐसी पत्रिका है जो निरंतर और नियमित प्रकाशित होती रही है। यह ऐसी पत्रिका है जो विज्ञापनों पर जीवित नहीं है। इस पत्रिका में पहले पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक सिर्फ पर्यावरण और प्रकृति ही मौजूद रहती है। इसलिए यह पत्रिका सभी की प्रिय बनी हुई है और हर वर्ग का इसे प्रोत्साहन निरंतर मिलता रहा है।

आशीष दशोत्तर-पर्यावरण को लेकर आम लोगों में आज जागरूकता तो बढ़ी है, लेकिन लेखन के क्षेत्र में आज भी पर्यावरण के प्रति इतनी चेतना नहीं है। विज्ञान या पर्यावरण या तकनीक को लेकर लिखने वाले काफी कम हैं। इस सम्बन्ध में आपका क्या अनुभव रहा?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-यह सही है कि इन क्षेत्रों में लिखने वाले लोग काफी कम हैं लेकिन यह भी सुखद है कि जो लोग इस क्षेत्र में निरंतर लेखन कार्य कर रहे हैं वे पूरी ज़िम्मेदारी के साथ, पूरी गंभीरता के साथ और अपने दायित्व को समझते हुए लेखन कर रहे हैं। आशीष भाई, हमें यह समझना बहुत आवश्यक है कि इन विषयों पर लिखना आसान कार्य नहीं है। इसके लिए विषय का पूरा ज्ञान और विषय से सम्बन्धित सभी संदर्भ व्यक्ति के सामने होने चाहिए। आज का युग इतनी मेहनत का युग नहीं है, इसीलिए इस तरह के लेखन में कुछ कमी नज़र आती है। फिर भी स्थिति काफी संतोषजनक है। यहां मैं उल्लेख करना चाहूंगा कि पर्यावरण डाइजेस्ट ऐसी पत्रिका है जिसने लेखक कभी उधार नहीं लिए। हमने अपना लेखक वर्ग स्वयं तैयार किया। विषय केंद्रित लेख महत्वपूर्ण लेखकों से लिखवाए। देश के प्रमुख पर्यावरणविदों को पत्रिका में स्थान दिया। आज पर्यावरण डाइजेस्ट के पास अपने ऐसे लेखकों का बहुत बड़ा वर्ग उपलब्ध है जो इस पत्रिका से प्रेरित होकर पर्यावरण के क्षेत्र में लेखन कर रहे हैं।

आशीष दशोत्तर-पर्यावरण डाईजेस्ट को आपने जिस संकल्प के साथ प्रारंभ किया था, क्या वह आज तक कायम है?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-इस मायने में मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं और संतुष्ट भी कि जिन उद्देश्यों को लेकर मैंने यह यात्रा प्रारंभ की थी उसमें मैं बहुत हद तक सफल रहा हूं। मनुष्य अगर दृढ़ संकल्प कर ले तो क्या नहीं हो सकता? पर्यावरण डाइजेस्ट पत्रिका की शुरुआत ही हमने इस संकल्प के साथ की थी कि इस पत्रिका को सदैव जीवित रखा जाएगा। हमारा उद्देश्य पवित्र था और संकल्प दृढ़, इसीलिए हम अपने इस मिशन में कामयाब रहे। निरंतर सभी का स्नेह मिलता रहा और यह पत्रिका आज भी आपके सामने देश की सबसे पुरानी पर्यावरण पत्रिका बनी हुई है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति में हो रहे परिवर्तन के अनुसार पर्यावरण डाइजेस्ट ने भी अपने आप को परिष्कृत किया है, परिमार्जित किया है। इसके स्वरूप में परिवर्तन किया है। आज पत्रिका डिजिटली उपलब्ध है। यह सब प्रयोग निरंतर होते रहे हैं और होने भी चाहिए।

आशीष दशोत्तर-क्या आप इस बात को महसूस करते हैं कि तमाम प्रयासों के बाद भी हम प्राकृतिक समृद्धि की ओर अग्रसर नहीं हो रहे हैं? लोग चेतना संपन्न नहीं बन रहे हैं? पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अभाव है?

डॉ.खुशाल सिह पुरोहित-देखिए! पर्यावरण ऐसा विषय है जिस पर कोई अकेला व्यक्ति, कोई अकेला समाज, कोई अकेला वर्ग काम करे यह संभव नहीं है। पर्यावरण हमारे जीवन से जुड़ा है। हमारी प्रकृति से जुड़ा है। इसकी चिंता हमें सामूहिक रूप से ही करनी होगी। जब तक हम सब मिलकर इस दिशा में काम नहीं करेंगे, हमें सुखद परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। अनेकानेक विसंगतियां हैं, जिन्हें बढ़ाने में मनुष्य लगा हुआ है। हमारी अनेक आवश्यकताएं हैं जिन्हें पूर्ण करने के लिए हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। विकास की अंधी दौड़ के नाम पर हम प्राकृतिक संसाधनों को बाधित कर रहे हैं। प्राकृतिक स्थलों पर हो रही घटनाएं निरंतर हमें सचेत कर रही हैं फिर भी हम नहीं मान रहे हैं। इसे क्या समझा जाए? अगर हम अपनी ही ज़मीन खोदेंगे तो एक न एक दिन हमें उसमें गिरना ही है। पर्यावरण का विषय भी ऐसा ही है। इसकी चिंता हम सभी को करनी होगी। सभी मिलकर इस दिशा में काम करेंगे तो यकीनन हमें सफलता मिलेगी। बदलाव के दौर में बहुत सी विसंगतियां आती हैं लेकिन प्रकृति में इतनी ताक़त है कि वह इन सब विसंगतियों से हमें बाहर निकल सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि हम उसे महसूस करें अपनी भूमिका को तय करें और अपने संकल्प के साथ इस कार्य को करने में जुट जाएं।

आशीष दशोत्तर- पर्यावरण को लेकर शिक्षा आवश्यक है? या इसे यूं कहा जाए कि पर्यावरण में शिक्षा पद्धति का क्या योगदान होना चाहिए। इस पर आप क्या सोचते हैं?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-यह बहुत आवश्यक प्रश्न है। मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि पर्यावरण सिर्फ़ वक्तव्य और नीतियों तक ही सीमित न रहे। हमारी रीति में और हमारी प्रीति में भी पर्यावरण शामिल होना चाहिए। इसके लिए पर्यावरण शिक्षा बहुत आवश्यक है। देश, समाज और सरकार सभी को समाज निर्माण के लिए सिर्फ़ और सिर्फ़ शिक्षकों से अपेक्षा रहती है। हम सब जानते हैं कि शिक्षक के कंधों पर मनुष्य का भविष्य टिका हुआ है। माता-पिता तो सिर्फ़ जन्म देते हैं लेकिन शिक्षक उसे सर्वश्रेष्ठ जीवन प्रदान करते हैं। शिक्षक की भूमिका उस दीपक की तरह होती है जो अपनी रोशनी से हजारों अपने जैसे दीपों को रोशन कर सकता है। शिक्षा की ज्योति समुचित देश और समाज को आलोकित करने के लिए समर्थ है। शिक्षक ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो निरंतर सृजन का शंखनाद करता है। जब यह सृजन पर्यावरण को लेकर होगा तो इसका अधिक से अधिक समाज पर प्रभाव पड़ेगा। शिक्षा के द्वारा अगर एक विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति सचेत होता है तो वह अपनी पूरी पीढ़ी को पर्यावरण चेतना से संपन्न बनाता है।

आशीष दशोत्तर-इस शिक्षा व्यवस्था में 'पर्यावरण डाइजेस्ट' जैसी पत्रिका की भी अपनी भूमिका होनी चाहिए। क्या पत्रिका ने पर्यावरण शिक्षा को लेकर या नई पीढ़ी को पर्यावरण से जोड़ने को लेकर कोई विशेष प्रयास किए?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित- यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न किया है आपने। मेरा ऐसा मानना है कि आपका कोई भी प्रयास जब तक नई पीढ़ी के साथ नहीं जुड़ता है वह सफल नहीं हो सकता। हमारा उद्देश्य यही होना चाहिए कि हमारे प्रत्येक कार्य से हमारा विद्यार्थी वर्ग और युवा पीढ़ी आगे बढ़े। हमने पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को जोड़ने के लिए कई आयोजन किए। उन आयोजनों में विभिन्न प्रतियोगिताओं को आयोजित कर विजयी विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया। हमने अपनी पत्रिका को उन विद्यार्थियों तक पहुंचाया। युवा वर्ग के लेखकों को अपनी पत्रिका में स्थान देकर उनके भावों को जनमानस के सामने लाने का प्रयत्न किया। पत्रिका में कई

ऐसे अंक भी प्रकाशित किये जिसमें युवाओं को अपनी बात रखने का मौका मिला। इस तरह हमने पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों और युवाओं में प्रकृति के प्रति नई चेतना का संचार करने का प्रयास किया। हमने छात्रों के लिए पर्यावरण डाइजेस्ट के अन्तर्गत कई वर्षों तक महत्वपूर्ण प्रतियोगिताएं आयोजित की। अंचल के स्कूलों तक पहुंच कर विद्यार्थियों को जागरूक किया। उन्हें पौधारोपण के प्रति प्रेरित किया। प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने संबंधी महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया। आज विद्यालयों में इको क्लब स्थापित हैं तो इस पर कहीं ना कहीं पर्यावरण डाइजेस्ट द्वारा पूर्व में किए गए प्रयासों की प्रेरणा भी मौजूद है।

पर्यावरण विकास देश की समृद्धि में सहायक।

आशीष दशोत्तर-जब भी किसी पत्रिका का प्रकाशन होता है तो एक संपादक किसी न किसी विचार के प्रति प्रतिबद्ध रहता है। आपने इस पत्रिका की शुरुआत से लेकर अब तक किस विचार के प्रति अपना समर्पण रखा?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-मेरी प्रतिबद्धता सदैव सामान्य पाठक के प्रति रही है। मेरा यह मानना रहा है कि व्यक्ति की विचारधारा उसके पाठकों पर थोपी नहीं जानी चाहिए। एक पत्रिका का संपादक अपने विचार व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र रहता है, मगर उसे समूचे समाज का हित ध्यान में रखते हुए अपना दायित्व निभाना चाहिए। इसी दायित्व को निभाना मेरी विचारधारा का मूल तत्व रहा। जब लोक चेतना के योगदान के लिए महामहिम राष्ट्रपति जी, उपराष्ट्रपति जी, राष्ट्रीय एवम् प्रादेशिक स्तर पर विभिन्न राजनीतिक, प्रशासनिक व्यक्तियों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं ने इन कार्यो की प्रशंसा की तो महसूस हुआ कि मैं सही पथ पर अग्रसर हूं। पत्रिका के दशकपूर्ति अवसर पर मध्यप्रदेश शासन के जनसम्पर्क विभाग ने अपनी विज्ञप्ति में उल्लेख भी किया कि- ''पर्यावरण डाइजेस्ट एक अव्यावसायिक प्रकाशन है, जो पर्यावरण संरक्षण की लोक चेतना के लिये पिछले एक दशक से सक्रिय है। पत्रिका के सम्पादक डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित पर्यावरण संरक्षण पर विगत कई वर्षों से सक्रिय हैं तथा इस विषय पर अपनी आक्रामक शैली के लेखन के कारण अपनी अलग पहचान रखते हैं। यही कारण है कि पर्यावरण में जिस विचार को डाइजेस्ट करना मुश्किल समझा जाता है, पत्रिका उसका सरलीकरण करने में सफल हुई है। इसमें आलेखों की सारगर्भिता, संक्षिप्तता और भाषा की प्रवाहमयता अपने आप में अनूठी है। पर्यावरण से जुड़े हर पहलू का स्पर्श इसमें शामिल होता है।'' यह पत्रिका के पीछे जनचेतना की विचारधारा का ही प्रमाण है।

आशीष दशोत्तर-मालवा को प्राकृतिक दृष्टि से बहुत संपन्न माना जाता रहा है। यह कहावत भी प्रसिद्ध है, 'मालव माटी गहन गंभीर, पग-पग रोटी, डग-डग नीर'। परंतु मालवा के मिज़ाज निरंतर बिगड़ रहे हैं। इसे लेकर आपने क्या विशेष कार्य किए हैं।

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-मालवा में पर्यावरण के बिगड़ते स्वरूप पर हमारा विशेष ध्यान रहा। समय-समय पर इसके लिए प्रयास भी किए। हमने मालवा के पर्यावरण की पहली नागरिक रिपोर्ट के सघन सर्वेक्षण हेतु वर्ष 1991 में दस हजार कि.मी. की यात्रा की। इस रिपोर्ट का प्रकाशन पुस्तक के रूप में हुआ। इस पुस्तक का लोकार्पण 28 जनवरी 1993 को मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन ने किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा- ''रतलाम पर्यावरण के लिए सहज भाव से सारे मध्य प्रदेश का केन्द्र हो गया है, इसके लिये मैं खुशाल सिंह पुरोहित को बधाई देता हूँ। यहां के कार्य से प्रेरणा लेकर प्रदेश के दूसरे क्षेत्रों में भी इस प्रकार का कार्य होगा। मेरी राय में बंकिमचंद जी का जो गान है, सुजलाम्, सुफलाम् अब उसमें रतलाम भी जुड़ गया है।'' मैं समझता हूं, सुमन जी द्वारा कहे गए ये शब्द हमारे प्रयासों का प्रतिफल और हमारे सरोकारों की सनद है।

आशीष दशोत्तर-आपके जीवन और कार्यो पर आचार्य विनोबा भावे का प्रभाव परिलक्षित होता है।

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-आशीष जी, यह आपने सही कहा है। विनोबा जी का मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। मैं विनोबा जी के आश्रम में कई बार गया भी और उनके दर्शन का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ। यही कारण रहा कि उनके भूदान आंदोलन और सर्वोदयी जीवन शैली से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। इसकी झलक आपको पर्यावरण संबंधी अनेक लेखों एवं मासिक पत्रिका के नियमित प्रकाशन तथा पश्चिमी मध्य प्रदेश में फैले पर्यावरण कार्यो के रूप में दिखाई देती है। रतलाम शहर के पेयजल के प्रमुख स्त्रोत धोलावाड़ बांध के जलग्रहण क्षेत्र में एक रासायनिक उद्योग द्वारा प्रदूषण फैलाने के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय में लोकहित याचिका लगाने जैसे विशिष्ट प्रयासों का कारण विनोबा जी के सान्निध्य से मिली ताक़त ही रही।

आशीष दशोत्तर-आपकी पत्रकारिता के गहन अनुभव रहे हैं। क्या आप समझते हैं कि बीते दशकों के दौरान कुछ ऐसे महत्वपूर्ण बदलाव रहे जिन्होंने हमारे जीवन शैली को ही बदल दिया?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-आज से 25-30 वर्ष पूर्व और आज की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। न सिर्फ़ जीवन मूल्य बदले, हमारे नैतिक मूल्यों और चरित्र में भी परिवर्तन आया है। व्यक्ति की सोच बदली है। इसका जीवन स्तर भी बदला है । परिस्थितियां मनुष्य को मशीन बनाने में लगी रहीं और आज

मनुष्य मशीन बन ही गया है। ऐसे में हमारे रिश्ते भी दरकने लगे हैं। आपसी संबंध टूट रहे हैं। बढ़ती तकनीकी सुविधाओं से घर परिवार का पर्यावरण भी बिगड़ रहा है। दरअसल देखा जाए तो अस्सी का दशक वैश्विक रूप से काफी परिवर्तन वाला रहा। संचार क्रांति को लेकर पूरी दुनिया में एक नया वातावरण तैयार हो रहा था। विकास के नए प्रयोग निरंतर बढ़ रहे थे। इसके साथ पर्यावरण के प्रति भी लोगों में जागरूकता बढ़ने लगी थी। यह वह समय था जब लोगों को एहसास होने लगा था कि प्राकृतिक संसाधनों से मनुष्य ने जो छेड़छाड़ की है उसके प्रतिकूल परिणाम सामने आने लगे हैं। भारत की दृष्टि से यह राजनीतिक उथल-पुथल वाला दशक भी रहा था। कई सारे नए वैचारिक परिदृश्य भी सामने आने लगे थे। मध्य प्रदेश की दृष्टि से इस दशक के अंत में पर्यावरण को लेकर नई पहल की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसी आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए एक ऐसी पत्रिका प्रारंभ करने का विचार मन में आया जो हमें हमारी प्रकृति के करीब ले जाए, प्रकृति में हो रहे है परिवर्तनों से अवगत करवाए और साथ ही आम जनता को प्रकृति से जोड़े। पत्रकारिता के जरिए भी मैंने सदैव समाज के विकास और पर्यावरण की चेतना को बढ़ाने पर ही विशेष बल दिया था। इसका लाभ भी पत्रिका को प्राप्त हुआ।

आशीष दशोत्तर-बार-बार यह कहा जा रहा है कि प्रकाशन प्रौद्योगिकी पर गंभीर संकट हैं। अख़बारों, पुस्तकों, पत्रिकाओं पर संकट है। लोगों की रुचि नहीं है। आपके साथ भी क्या यही स्थिति है?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-मैं इससे इत्तेफाक नहीं रखता। मेरा मानना है कि छपे हुए शब्दों की गरिमा और महत्व कभी कम नहीं हो सकते। हर दौर में प्रकाशित सामग्री महत्वपूर्ण हुआ करती है और आज भी बनी हुई है, आगे भी बनी रहेगी । मैंने जब अपनी पत्रिका की शुरुआत की तो कई सारे संकट मेरे सामने थे। किसी भी कार्य की शुरुआत कठिनाई भरी ही होती है। अगर यह कठिनाई न हो, चुनौतियां सामने न खड़ी हों तो उस कार्य को करने में आनंद भी नहीं आता है। फिर प्रकृति और पर्यावरण को लेकर कोई काम करना हो तो उसके लिए तो चुनौतियां आज भी हमारे सामने खड़ी हैं। पत्रिका की शुरुआत करते समय चुनौतियों का सामना करने का साहस भी पैदा हो गया। मैं समझता हूं कि आप प्रकृति की चिंता करते हैं तो प्रकृति भी आपकी चिंता करती है। आप प्रकृति की भलाई की तरफ जाते हैं तो प्रकृति भी आपकी भलाई की तरफ आती है। इसलिए उन चुनौतियों को मैं चुनौतियां न मानकर इस कार्य में अनिवार्य तत्व मानता रहा, यही कारण रहा कि पत्रिका प्रकाशन का स्वप्न धरातल पर उभर कर आ सका। इस पत्रिका की निरंतरता इस बात को रेखांकित करती है कि छपे हुए शब्द आज भी कायम हैं और इनका महत्व आगे भी बना रहेगा।

आशीष दशोत्तर-एक विचार बार-बार यह भी सामने आता है कि विकास अगर होगा तो प्रकृति तो प्रभावित होगी ही। आपका क्या सोचना है?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-यह सच है कि हम विकसित होते हैं तो हमारा बहुत कुछ पीछे छूट जाता है । इसी प्रकार हमारी प्रकृति भी अगर प्रभावित हो रही है तो इसमें कहीं न कहीं निरंतर हो रहे विकास की भूमिका है। मेरा यह मानना है कि कोई भी विकास, विनाश की शर्त पर नहीं होना चाहिए। हम प्रगति करें लेकिन अपने मूल्यों को न छोड़ें। हमारा वैभव बढ़े लेकिन हम अपनी परंपराओं से न कटें। यदि ऐसा विकास होगा तभी हम अपने प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा कर पाएंगे। हमारा सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक परिवर्तन और राजनीतिक परिवर्तन प्रकृति से किसी तरह जुदा नहीं है। इन सभी पर प्रकृति का प्रभाव पड़ता है, और इन सभी का प्रकृति पर भी प्रभाव पड़ता है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित नए प्रयोग हुए तो हमें पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने के नए आयाम भी मिले। किस तरह नई सूचना क्रांति पर्यावरण के प्रति घातक है? नई क्रांति से प्रकृति का कितना भला होगा? मनुष्य का जीवन कितना प्रभावित होगा? जीव जंतुओं पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, आदि ऐसे कई विषय रहे जो हमारे पर्यावरण की चिंता के साथ इसमें शामिल होते रहे। इसी प्रकार आर्थिक परिदृश्य के नए स्वरूप में आने से भी काफी सहायता मिली। सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और प्रकृति के विनाश की तरफ बढ़ते कदम जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों को हमने पत्रिका के माध्यम से उभारा। इन सब की चिंताएं हमें विकास के साथ करनी चाहिए।

आशीष दशोत्तर-आज के समय में वे कौन से मुद्दे हैं जिन पर हम सभी को मिलकर विचार करना बहुत आवश्यक है?

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-हमारे सामने सबसे बड़ा मुद्दा हमारे पर्यावरण को बचाने का ही होना चाहिए। आज हम देख रहे हैं कि वैश्विक स्तर पर पर्यावरण का असंतुलित होना चिंता का विषय बना हुआ है। पूरी दुनिया इस बात पर चिंतन कर रही है कि कैसे बिगड़ते पर्यावरण को बचाया जाए। प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए तरह-तरह की कोशिशें की जा रही हैं। हमारे अपने देश में ही हम देखें तो दिल्ली में लोगों का रहना मुश्किल हो गया है। इतना प्रदूषण बढ़ गया है कि मनुष्य श्वांस तक नहीं ले पा रहा है। अन्य प्रदेशों में भी बढ़ते वाहनों और घटते वनों की परिस्थिति में पर्यावरण को काफी नुकसान हो रहा है। इन मुद्दों की तरफ हम सभी को मिलकर विचार करना चाहिए। कहते भी हैं कि प्रकृति एक चक्र की तरह है। हम जिन चीजों को पीछे छोड़ आए हैं हमें पुनः उन्हीं पर लौटना होगा। प्रकृति के साथ हमने बहुत छेड़छाड़ कर ली है, अब प्रकृति को सहेजना होगा। जिन संसाधनों को हमने भुला दिया है उन्हें फिर से अपनाना होगा। जब तक हम अपनी प्रकृति के करीब नहीं आएंगे, उससे जुड़ेंगे नहीं, न हमारा भला होगा और न हमारे वर्तमान का। हमारे भविष्य की तो पूछिए ही मत। आने वाली पीढ़ी के सामने कैसे-कैसे संकट आने वाले हैं इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। हमारे चिंतन में, हमारे विमर्श में इन सब बिंदुओं का समावेश अगर होगा तो हम बेहतर कल की तरफ बढ़ सकेंगे।

आशीष दशोत्तर-पुरोहित जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद जो आपने अपने इस लंबे सफर में कुछ लम्हे हमारे साथ बिताए और अपने पर्यावरण से हमारे पर्यावरण को हरा-भरा किया।

डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित-आपका भी धन्यवाद आशीष भाई। इस तरह की बातें, इस तरह का विचार विमर्श और इस तरह का चिंतन निरंतर होते रहना चाहिए।

पर्यावरण डाइजेस्ट देश की एकमात्र ऐसी पत्रिका है जो निरंतर और नियमित प्रकाशित होती रही है। यह ऐसी पत्रिका है जो विज्ञापनों पर जीवित नहीं है। इस पत्रिका में पहले पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक सिर्फ पर्यावरण और प्रकृति ही मौजूद रहती है। इसलिए यह पत्रिका सभी की प्रिय बनी हुई है और हर वर्ग का इसे प्रोत्साहन निरंतर मिलता रहा है।

संपर्क करें:
आशीष दशोत्तर
12/2, कोमल नगर,
रतलाम-457 001
मो. 9827084966